Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 04 Issue 02
FEBRUARY 2018

मैं हूँ पर निबंध

प्रेम कुमार निराला

प्रस्तावना

मैं कौन हूँ? मैं एक लड़की हूं जो अभी अपनी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुकी है। मैं अपने आप को आस-पास के लोगों के प्यार और समर्थन के साथ भरा हुआ महसूस करती हूं। मेरे जीवन में उच्च महत्वाकांक्षाएं हैं और मैं अपने परिवार का नाम रोशन करना चाहती हूं।

मैं एक संयुक्त परिवार में रहती हूँ। परिवार में हम छह लोग हैं - मेरे दादा, दादी, पिता, मां और मेरा छोटा भाई। परिवार में हम सभी एक-दूसरे के बहुत करीबी हैं और हर त्योहार और अवसर को बड़े उत्साह से मनाते हैं। हमारा घर अक्सर विशेष रूप से सप्ताहांत और छुट्टियों पर मेहमानों से भर जाता है। मेरा परिवार मुझे परिभाषित करता है। मैं जो कुछ हूं सिर्फ़ उनके कारण हूं। मेरे परिवार का प्रत्येक सदस्य मुझे प्रेरणा देता है और मेरे जीवन को नई दिशा देता है। मैं संक्षिप्त में अपने परिवार के हर सदस्य का आपको परिचय देना चाहूंगी क्योंकि इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि मैं कौन हूं और मैं ऐसी क्यों हूं।

मेरा प्यारा परिवार

मेरे दादाजी: मेरे दादा बहुत प्यारे और मददगार हैं। वे मेरा और मेरे भाई का हर चीज में समर्थन करते हैं। अपने बचपन और शुरुआती वयस्कता के दौरान वे भारत के उस हिस्से में रहते थे जो अब पाकिस्तान का एक हिस्सा है। अधिकांश अन्य हिंदुओं की तरह वे यहां विभाजन

ISSN 2454-2695
Volume 04 Issue 02
FEBRUARY 2018

के दौरान आए थे। उस कठिन समय के दौरान उनके जीवन की कहानी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

मेरी दादी: मेरी दादी बहुत धार्मिक महिला है। वे बेहद सख्त हैं पर बहुत प्यारी भी हैं। उन्हें अपने बचपन के दिनों की कई बातें अभी भी याद हैं खास कर उस वक्त की जब वे छोटी थी। अक्सर वे हमें उन दिनों के बारे में बताती हैं हम उनके साथ में बैठकर उन कहानियों को सुनना पसंद करते हैं।

मेरी माँ: मेरी मां नौकरी करने वाली महिला है। वे अपने कार्यालय की देखभाल करने के साथ-साथ घर के काम को भी बहुत अच्छे से संभाल लेती हैं I मेरी माँ हम सबके जागने से बहुत पहले जाग जाती हैं और घर के काम की शुरूआत कर देती हैं। वे खाना बनाती हैं, हमें तैयार करती हैं, हमें स्कूल में भेजती हैं और फिर उसके बाद अपने कार्यालय में जाती है। शाम में वह हमारी पढाई में मदद करती हैं, रसोई के काम-काज को निपटाती हैं और हमारे साथ गुणवत्ता का समय बिताती है। माँ अपने प्यार और प्रेम के साथ परिवार को बांधे रखती है।

मेरे पिताजी: मेरे पिता हर चीज़ के प्रति काफी सख्त हैं। वे चीज़ों को क्रम में रखना पसंद करते हैं। उनके अनुसार सभी को अनुशासित जीवन जीना चाहिए। वे समय के बहुत पाबंद हैं और चाहते हैं कि हम समय का सम्मान करें। वे हमारे परिवार की ताकत का आधार हैं।

मेरा भाई: परिवार में सबसे कम उम्र के होने के नाते मेरे भाई को सभी बहुत प्यार करते हैं। वह हम सभी के लिए खुशी का स्रोत है। वह खेलना पसंद करता है और हर किसी को अपने खेलों से किसी ना किसी तरह जोड़े रहता है। मैं उसके साथ बहुत खास बंधन साझा करती हूं। हम

ISSN 2454-2695
Volume 04 Issue 02
FEBRUARY 2018

अध्ययन करते हैं, खेलते हैं, खाते हैं, हंसते हैं और यहाँ तक एक साथ रोते भी हैं। हम कई बार लड़ते भी हैं लेकिन समय गवाएँ बिना अपने मुद्दों को फिर से सुलझा लेते हैं।

मेरा परिवार मुझे परिभाषित करता है

ठीक ही कहा गया है कि हमारे दोस्तों की कंपनी और पर्यावरण का हमारे व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है। आज मैं जब खुद को देखता हूं तो मैं पाता हूं कि मैंने अपने परिवार के सदस्यों की विभिन्न आदतों को कैसे विरासत में पाया है। मेरे पास मेरे दादाजी की ताकत और साहस है। लोग मुझे जोशीला और दोस्ताना पाते हैं और मेरा मानना है कि ये सभी गुण मुझे मेरी दादी से मिले हैं। मैं आसपास प्यार के साथ मुस्कुराहट फैला रही हूं और सभी कार्य ईमानदारी से करती हूं और इस गुणवत्ता को मैंने अपनी मां के हासिल किया है। मैं कड़ी मेहनत कर रही हूं और मेरे पिता की तरह ही लक्ष्य निर्धारित करके कार्य करती हूं और कौन कहता है कि आप केवल अपने बड़ों से सीख सकते हैं? आप उन लोगों से भी सीख सकते हैं जो आपसे उम्र में छोटे हैं। मैं थोड़ी शरारती भी हूँ और मुझे लगता है कि यह मेरे शरारती छोटे भाई के साथ समय बिताने का परिणाम है।

निष्कर्ष

हमारे व्यक्तित्व को सही आकार देने में हमारा परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारे परिवार के बुजुर्ग हमें हर दिन महत्व के बारे में बहुत कुछ सिखाते हैं। मुझे इस बात कि बेहद खुशी है कि मेरे पास एक अद्भुत परिवार है। मैं खुश हूँ और मुझे अपने उपर गर्व है।